5.5.2020

कक्षा – आठवीं
विषय – संस्कृत
पाठ – 5

शब्द		अर्थ
फलिनः	–	फलवाले
गुणिनः	–	गुणों वाले
शुष्कवृक्षाः	–	सूखे हुए वृक्ष
दारिद्र्यम्	–	गरीबी
पातकम्	–	पाप
जागरितः	–	जगा हुआ
नापृष्टः	–	बिना बुलाये
ब्रूयात्	–	बोलना चाहिए
चान्येन	–	और दूसरे से
पृच्छतः	–	पूछते हुए
जानन्	–	जानता हुआ
मेधावी	–	बुद्धिमान व्यक्ति
जडवत्	–	मूर्ख के समान
आचरेत्	–	व्यवहार करे
गुणिसङ्गमः	–	गुणी लोगों का साथ
अप्रवासगमनम्	–	घर से बाहर जाना
प्राकृतैः	–	मूर्खों के साथ
सङ्गतिः	–	साथ
समयच्युतिः	–	समय पर चूक जाना
आज्ञाफलम्	–	आज्ञा का परिणाम, आज्ञा मानना
रिपुः	–	शत्रु
दुश्चरितम्	–	बुरा आचरण
वञ्चनम्	–	ठगना

Scanned with CamScanner

शब्द = अर्थ
विमृश्यकारिणम् - समझकर कार्य करने वाले को
क्षयम् - विनाश।
भारती - सरस्वती
वृणुते - वरण कर लेती है

1. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ लिखिए -

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

अर्थ - निश्चय ही परिश्रम करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं, मन की इच्छा से नहीं। जिस प्रकार सोये हुए शेर के मुख में हिरन प्रवेश नहीं कर सकता।

2. विद्वत्वं च नृपत्वं च न एव तुल्ये कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते॥

अर्थ - विद्वान और राजा की कभी तुलना नहीं की जा सकती। लेकिन राजा अपने देश में पूजा जाता है, और विद्वान सब जगह पूजा जाता है।

3. न कश्चित् कस्यचिन्मित्रम् न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः।
व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा॥

अर्थ - न कोई किसी का मित्र है, न कोई किसी का शत्रु है। व्यवहार के द्वारा ही मित्र और शत्रु की पहचान होती है।

4. उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं जपतो नास्ति पातकम्।
मौनेन कलहो नास्ति नास्ति जागरिते भयम्॥

अर्थ - उद्योग करने पर दरिद्रता नहीं आती, जपने पर पाप नहीं होता है चुप रहने पर झगड़ा नहीं होता, जागने पर डर नहीं लगता है।

Scanned with CamScanner

Red Wings
Page No. __ Date __/__/20__

5. अधमा: धनमिच्छन्ति, धनं मानं च मध्यमाः।
उत्तमा: मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां धनम्॥

अर्थ- नीच व्यक्ति धन की इच्छा करते हैं, मध्यम व्यक्ति धन और मान (इज्जत) की इच्छा करते हैं। उत्तम व्यक्ति मान की इच्छा करते हैं, निश्चय ही मान सबसे उत्तम धन है।

6. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफला: क्रिया:॥

अर्थ- जहाँ नारियों की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ ऐसा नहीं किया जाता, वहाँ सभी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं।

7. अपूर्व: कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारती।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्॥

अर्थ- हे सरस्वती, यह तुम्हारा कोई अनोखा ही खजाना है, जो खर्च करने पर बढ़ता है और इकट्ठा करने पर नष्ट हो जाता है।

8. नमन्ति फलिनो वृक्षा: नमन्ति गुणिनो जना:।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन॥

अर्थ- फलों से लदे हुए वृक्ष झुक जाते हैं, गुणी लोग भी झुक जाते हैं। सूखे पेड़ और मूर्ख लोग कभी नहीं झुकते हैं।

9. अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।
वञ्चनं चापमानं च मतिमान् न प्रकाशयेत्॥

अर्थ- धन का नाश, मन का ताप (दुःख), स्त्री का चरित्र, किसी से ठगे जाने पर, किसी के द्वारा अपमान किए जाने पर (विशेष तौर पर अपने से नीचे के लोगों के द्वारा) बुद्धिमान लोग इसे प्रकाश में ना लाएं, अर्थात् दूसरों को न बताएं अन्यथा आपका उपहास (मजाक)

Scanned with CamScanner

उड़ाया जाएगा और आपके दुःख को कोई नहीं समझ पाएगा।

10 सहसा विदधीत न क्रियाम विवेकं परमापदां पदम।
वृणुते हि विमृश्य कारिणं गुण लुब्धाः स्वयमेव सम्पदः॥

अर्थ- किसी कार्य को बिना सोच - विचार अनायास नहीं करना चाहिए। विवेकहीनता आपदाओं का परम या आश्रय स्थान होती है। अच्छी प्रकार से गुणों की लोभी संपदाएँ विचार करने वाले का स्वयमेव वरण करती है, उसके पास चली आती हैं।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए —

(क) उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं, जपतो नास्ति पातकम्।
मौनेन कलहो नास्ति, नास्ति जागरिते भयम्॥

(ख) अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।
वञ्चनं चापमानं च मतिमान् न प्रकाशयेत्।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए —

(क) जहाँ नारियों का मान होता है, वहाँ देवता रहते हैं।
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।

(ख) उद्योग करने पर दरिद्रता नहीं आती है।
उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं।

(ग) लोग निष्कलंक चन्द्रमा को नमस्कार करते हैं।
जनाः कलंकहीनः चन्द्रं नमन्ति।

(घ) सीधे लोग ही सर्वत्र ठगे जाते हैं।
सरलजनाः एव सर्वत्र वञ्चयन्ति।

(ङ) हमें प्रत्येक कार्य सोच - समझकर करना चाहिए।
वयं प्रत्येक कार्यं विचारयामः।

Scanned with CamScanner

(27)

Page No. ___ Date ___/___/20___

(च) कलम् से लिखना चाहिए।
कलमेन लिखेत् ।

(छ) पशुओं का चमड़ा भी उपकार करता है।
पशूनाम् चर्म अपि उपकरोति ।

(ज) उत्तम लोग मान को धन समझते हैं।
उत्तमजनाः मानं धनं मन्यन्ते ।

(झ) परोपकार के बिना मनुष्य के जीवन को धिक्कार है।
परोपकारार्थम्बिना मनुष्यस्य जीवनं धिक् ।

4. सन्धि - विच्छेद कीजिए -

मूर्खाश्च = मूर्खाः + च
जपतोनास्ति = जपतः + न + अस्ति
यत्रैतास्तु = यत्र + एताः + तु
क्षयमायाति = क्षयम् + आयाति
उद्योगे = उत् + योगे

Scanned with CamScanner